International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 07-12-2020; Accepted: 22-12-2020; Published: 08-01-2021
www.alleducationjournal.com
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 08-10

रामचरित मानस में मानवीय दृष्टिबोध

डॉ. अंशुला मिश्रा
Guest Facility, Department of Hindi, APSU Rewa, Madhya Pradesh, India

सारांश
गोस्वामी तुलसीदास जी ने राम के आदर्श को भारत राष्ट्र की एकता के लिए परम तत्व के रूप में प्रदान किया है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम मानव रूप में भी राज, राष्ट्र, धर्म, राजनीति और मानवता की गरिमाओं से भली-भाँति परिचित हैं। तद्नुसार ये बड़ी सर्तकता से मर्यादा का पालन करते हैं। तुलसीदास ने मर्यादा की रक्षा के सूक्ष्म स्थलों का बड़ी सर्तकता से चयन किया है और उनकी मर्यादा को बड़ी सजगता से रखाया है। माता-पिता, गुरू की आज्ञा पालन, मातृ-प्रेम, पति-पत्नी के मध्य उचित संबंध, प्रशासन प्रजा के मध्य मर्यादा सीमा, पारिवारिक पवित्र शालीनता, जीव मानवता का वर्ग के मध्य मर्यादा आदि-आदि ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर मानसकार की सचेष्ट दृष्टि रही है। इस प्रकार मानस में मानवीय पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय अनेक मर्यादापालन के अपूर्व स्थल हैं, जिनका गोस्वामी जी ने बड़ी सर्तकता व सक्षमता से पालन किया है। जहाँ भी जितना अधिक त्याग है, चतित्र में उतनी ही विशेष उत्कृष्टता दिखाकर मानो गोस्वामी जी ने हमें त्यागमय जीवनयापन की शिक्षा दी है।

मूलशब्दः मानवीय दृष्टिबोध, राष्ट्र की एकता, धर्म

प्रस्तावना
गोस्वामी तुलसीदास ने निजता के प्रति अनुराग उत्पन्न करने का मनोरम पाठ पढ़ाया और अपने देश की अपनी भाषा, अपने ही रीति-रिवाजों को अपनाने का अनुंरोध करके मानव जाति के जीवन में मानवता की सच्ची उमंग उत्पन्न की। तुलसी के शब्दों में कीर्ति, कविता वही उत्तम है जो गंगा जी की तरह सबका हित करने वाली हो। यथा-कीरति भनिति भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।[1] तुलसीदास जी कहते है कि श्री राघुनाथ जी की कथा कल्याण करने वाली और कलियुग के पापों को हरने वाली है। मेरी इस भद्दी कविता रूपी नदी की चाल पवित्र जल नदी की चाल की भाँति टेढ़ी है। प्रभु श्री रघुनाथ जी के सुन्दर यश के संग से यह कविता सुन्दर तथा सज्जनों के मन को भाने वाली हो जायेगी। श्मसान के अपवित्र राख भी श्री महादेव जी के अंग के संग से सुहावनी लगती है और स्मरण करते ही पवित्र करने वाली होती है-

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की।।
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी।
भव अंग भूति मसान की सुमिरन सुहावनी पावनी।।[2]

मानव अपने देशकाल और परम्पराओं की परिधि में आबद्ध होने के कारण अपने विभिन्न आयामों से इन परिणामों के निराकरण में अपने भौतिक जीवन की सार्थकता समझाता है। गोस्वामी जी के शब्दों में-

गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई।।
जो आनंद सिन्धु सुखरासी। सीकर से त्रयलोक सुपासी।।

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के मानव रूप में यदि आदर्श चरित्रों का दिग्दर्शन और अनुकरण किया जाय तो परिवार, समाज एवं राष्ट्र में व्याप्त विषमताएँ दूर हो जायें। गोस्वामी तुलसीदास जी का कथन है कि श्रीराम का जीवन सेतु है जिसे सामाजिक व मानवीय विकृतियों के निराकरण का मार्ग दर्शाकर जीव-जीव के मध्य निकटता लायी गई है-

कस न कहहु अस रघुकुलकेतू। तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू।।
धरम सेतु पालक तुम्ह तातां प्रेम विवस सेवा सुखदाता।।[3]

तुलसीदास ने मानस में राष्ट्रीय भावना की व्यापकता की वृद्धि करते हुए कहा है कि परिवार में अथवा राष्ट्र मे यदि श्री राम के मानव जीवन का आदर्श लाया जाय तो घर से ही सुखशांति का उदय हो जाय। श्रीराम सदैव बचपन से ही आदर्श पुत्र है। वे सदैव माता-पिता, गुरू के आदर्श पालक है तथा उन्हें प्रणाम करके सब कार्य करते है। अतः माता-पिता गुरू के जीवन स्वरूप है।

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरू नावहिं माथा।।
आयसु मागि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषइ मन राजा।।[4]

मातृ-प्रेम की शिक्षा राष्ट्रीय एकता की कड़ी में बेजोड़ उदाहरण कहा जा सकता है। गोस्वामी जी ने रामराज्य में प्रशासन और प्रजा में परस्पर प्रेम के संबंध पर बल दिया है। शाश्वत श्रीराम कहते है कि -यदि मुझसे कोई अनीति हो जाए तो प्रजा उसको बिना भय के ध्यानाकर्षण करके रोक दे।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसी की महत्ता प्रकट करते हुए लिखा है कि - ''यदि कोई पूछे कि जनता के हृदय पर सबसे अधिक विस्तृत अधिकार रखने वाला हिन्दी का सबसे बड़ा व्यक्ति कौन है तो उसका एक मात्र उत्तर यही हो सकता है कि भारत हृदय भारतीय कंठ भक्त चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास।''[5]उक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि गोस्वामी जी के रामचरितमानस में मानव साहनुभूति एवं मानव प्रेम की भावना वर्णित है। वे विश्वव्यापी मानव प्रेम के दर्शन को स्थापित करने के लिए विशेष रूप से उत्सुक थे। उनका उदार मानव-प्रेम भारतीय जनता के लिए पूज्य बन गया है। उनके समन्वयात्मक दोहा, चौपाईयों में मानव मात्र के मंगल एवं कल्याण की भावनाएँ स्पष्ट झलकती हैं। सचमुच गोस्वामी तुलसीदास कृत ''श्रीरामचरितमानस'' विश्व विश्रुत महाकाव्य है। इस ग्रंन्थ में लोकमर्यादा, लोकदृष्टि तथा लोकोपकार की भावना, राष्ट्रीय भवना, विस्तार के साथ प्रतिफलित हुई है। गोस्वमी तुलसीदास व्दारा रचित रामचरित मानस महाकाव्य के अवलोकनोपरान्त यह तथ्य स्पष्ट होता है कि गोस्वामी जी ने मानस के माध्यम से लोक कल्याण का सुव्रत लिया था। उन्होंने जगत के समक्ष जो साहित्य प्रस्तुत किया है, वह सम्पूर्ण मानव समाज के लिए सुभद और सुखद है। तुलसी ने मानस मं एक ओर जहां आध्यात्मिक पक्षों को उजागर किया है, वही दूसरी ओर उन्होने सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षो को भी रूपायित किया है।
डॉ. प्रेम नारायण शुक्ल के शब्दो में - ''जीव और जगत के बीच में जो माया का भ्रम है उसे दूर करने के लिए तुलसी ने मार्ग प्रशस्त कर मानव

जगत को सुखद स्थितियो मे ले जाने की सतत् चेष्टा की है। आपने बताया कि तुलसी की उपासना में समस्त पद्धतियों का समावेश हुआ है, यही उदारता और सामंजस्य भाव तुलसी की विशेषता है।"[६] श्री नर्वदेश्वर चतुर्वेदी ने बताया कि -"तुलसी का यह भाव 'सिया राम मय सब जग जानी' उनकी व्यापक जीवन दृष्टि का प्रमाण है। राम जो सबके है, वह तुलसी के आराध्य है। यह उनके विशाल व्यक्तित्व का द्योतक है। राम के नाम के बहाने तुलसी दास जी बार-बार मानव को ऊपर उठाने के लिए प्रेरित करते है।"[७] साहित्य समाज का दर्पण होता है। तुलसी युगीन साहित्य से समाज की जो छवि देश के सम्मुख दृष्टिगोचर होती है, वह है आदेशोन्मुखी समाज। मानस में सर्व प्रथम चक्रवर्ती राजा दशरथ के रूप मे एक भारतीय राष्ट्रीय व्यक्तित्व सामने आता है,राज परिवार मे विशेष चहल-पहल है क्योकि वृद्ध राजा प्रजा सम्मति के अनुसार अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य भार सौपकर वानप्रस्त आश्रम मे प्रवेश करना चाहते है। ऐसे आनन्दोत्सव पर राजा दशरथ को आश्चर्य होता है कि उनकी सर्वाधिक प्रिय पत्नी कैकैयी अलंकारो का त्याग किये हुए खिन्न मना बैठी है, जबकी ऐसे अवसर पर उन्हे विशेष श्रृंगार करना चाहिए था। राजा कारण जानना चाहते हैं कि कैकयी उदास क्यों है? बहुत मनुहार करने पर वह राजा से दो बचन माँगती हैं। राजा स्थिति की गम्भीरता को मूल्याँकित नही कर सके। वस्तुतः कैकेयी प्रथम बचन भरत के लिए राज्याभिषेक की याचना करती है। राजा सुनकर आबाक रह जाते हैं। उन्हे समझ नहीं आता कि राम को भरत से भी अधिक चाहने वाली कैकयी अचानक कठोर विमाता कैसे बन गयी? राजा किंम कर्तव्य विमूढ़ हो जाते हैं। इस आघात को राजा दशरथ हृदयरूप नहीं कर पाये थे कि कैकयी ने राम के लिए वनवास के रूप में अपना दूसरा बचन माँगकर राजा पर बज्रपात कर दिया। राम को राजच्युत करना ही उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय था, लेकिन उसे चौदह वर्ष तक राज्य से निष्काषित करना तो मानव साक्षात ब्रजपात था। राजा बचन दे चुके थे और बचन भंग कर वे कुल परम्परा को भंग नहीं कर सकते थे। यथा -

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ बरू बचनु न जाई।।
नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटक गुंजा।।
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए। बेद पुरान बिदित मनु गाए।।[८]

उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस में गोस्वामी जी ने भारत रष्ट्र की विपुल संस्कृति को राम के आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। सम्पूर्ण रामचरितमानस श्री राम का आदर्श अयन है। पिता के बचन को निभाने के लिए राम ने चौदह वर्ष बन में व्यतीत किया। वहाँ उन्होंने बालि, मेघनाथ, कुम्भकरण और रावण आदि के बधोपरान्त जनकल्याण का चौदय वर्षीय बनवास पूर्ण कर वे अयोध्या लौटे। लेकिन राम जैसे आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श राजा की कसौटी पर सदैव परीक्षा देने को तत्पर रहे। वे मर्यादा पुरूषोत्तम थे। प्रजा-अनुरंजन उनका परम धर्म था। तुलसी युगीन मानस में जो आदर्श हमें दृष्टिगोच होते है, अब वे आदर्श प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं। मानस में भातृ-प्रेम की सुरसरि, वसुधैव कुटुम्बकम के रूप में अनवरत प्रवाहित होती है। मानस के पात्र पग-पग पर मर्यादा का पालन करने हेतु कष्ट उठाते हैं। राम को वनवास दिये जाने पर सारी प्रजा प्रतिवाद कर उठती है और राम के पीछे-पीछे वन तक चली जाती है। जगत माता सीता राक्षस के कैद में रहकर भी मर्यादित रहती है। मानस में वर्णित आदर्शो में से मानवता बाद, गांधीवाद, दृष्टिकोण, राष्ट्रवाद और संस्कृति, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक और राष्ट्रीय मूल्यों आदि उत्तरोत्तर श्री बृद्धि किये हैं। भारत का भाल उन्नत किये हैं। आधुनिक युग में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन जैसे भाइयों की तो कल्पना तक नही की जा सकती। मानस में मानवता बाद की भूमिका जगत को जागृति प्रदान करती है। भारत जैसे देश में राष्ट्रीय एकता अखण्डता की प्रेरणा मानस ग्रन्थ से ही प्राप्त हो सकती है। मानस के आदर्शों पर न चलने वाला राष्ट्र भक्त नहीं हो सकता। यही कारण है कि दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा गृह कलह मानव समाज को पतन की ओर ले जा रहा है। सद्शिक्षा से इतिहास पुराण मिथक काव्य एवं महाकाव्य आदि लोगों का मार्ग दर्शन ग्रन्थ हैं। चमत्कार और अलौकिक कर्म का वर्णन मानस में वर्णित है। श्रीरामानन्द सागर का रामायण सीरियल बहुत लोकप्रिय है। इसका आधार तो तुलसी का राम चरित मानस है। तुलसी दास सामन्तवाद और वर्ण व्यवस्था मानते थे। उनके राम महापुरूषोत्तम हैं, यानि वे सामाजिक मर्यादा भी मानते हैं। तुलसी के राम उदार हैं, न्यायी हैं, परदुखकातर और करूणामय भी हैं। " मानस की कथा में गहरी मानवीय भावनाएँ हैं। प्रेम है तो ईष्या देश भी है। जीवन विवके है, न्यय-अन्याय की व्यवस्था है, व्यक्तिगत और सामाजिक आचरण के मानदण्ड हैं, उत्तम काव्य तत्व है, प्रत्येक भरतीय को उन्हें ग्रहण करना चाहिये।"[९] मानस के मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए नैपाल निवासी श्री गुलाब खेतान ने कहा कि "मानव जीवन पर तुलसीदास जी की रचनाओं का जितना अधिक प्रभाव पड़ा है, कहना कठिन है। तुलसी की कथन भंगिमा इस प्रकार है कि वह हृदय को सीधे छू लेती है। आपने यह भी बताया कि नेपाल में तुलसी के रामचरित मानस का नेपाली अनुवाद घर-घर में प्राप्त हो सकता है। मानस की लोकप्रियता निश्चय ही असंदिग्ध है। उनके महान आदर्शो पर चलकर ही हम तुलसीदास जी की सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।" [१०] गोस्वामी तुलसीदास एक क्रान्तिकारी राष्ट्रीय महाकवि के रूप में थे। उन्होंने राम चरित मानस में राष्ट्रीय मूल्य, मानव मूल्य व्यापक जीवन दृष्टि की अभिव्यक्ति की है। विविध दृष्टियों से यह ग्रन्थ वंदनीय है। भरतीय राष्ट्रीय उन्नयनार्थ मानस एक अमूल्य निधि है। डॉ. रामेश्वर शुक्ल अंचल के शब्दों में - " तुलसीदास को मैं क्रान्तिकारी कवि के रूप में मानता हूँ क्योंकि उन्होने काव्य सृजन की पूरी परम्परा को ही बदल दिया। तुलसीदास ने बड़े आत्म गौरव के साथ कहा कि मैं कुछ लिखता हूँ, स्वांतः सुखाय लिखता हूँ। यह चुनौती अपने आप में क्रान्तिकारितापूर्ण है। यहि कारण है कि एक अवतारी शक्ति के रूप में वह जन-जन के हृदय में बैठ गये। आपने बताया कि ऐसा महान कवि जिसने हमारे देश के कीर्ति को दिशान्तिक बनाया, जिसने हमें अध्यात्मिक शक्ति प्रदान की, जिसने हमें जातीय गौरव की प्रतीति करायी, ऐसे महान कवि की मै बंदना करता हूँ। वह कथ्य, शैली, भाषा, सन्देश, अर्थ गौरव, इत्यादि सभी दृष्टियों से वन्दीय हैं। वह हमारे लिए गौरव है, एक अमूल्य निधि है। मानस पर अपना व्यक्तित्व प्रकास करते हुए न्याय मूर्ति श्री राम कृष्ण शुक्ल ने कहा है कि - "तुलसी का 'रामचरित मानस' दुनियाँ के महाकाव्यों मे सर्व प्रथम माना गया है और इसका सबसे बड़ा कारण मानस में वर्णित शाश्वत मूल्यों की प्रतिष्ठा है। इसके साथ ही व्यापक समन्वय की दृष्टि जो मानस में हमे मिलती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। आपने बताया कि राम को मर्यादा पुरूषोत्तम बनाने वाले तुलसी ही थे। मानस में मानवीय दृष्टि ही भारतीय संस्कृति की मौलिक विशेषता कही जा सकती है। कहब संदेसु भरत के आएँ। नीति न तजिअ राजुपद पाएँ।। पालेहु प्रजहिं करम मन बानी। सेएहु मातु सकल सम जानी।। ओर निबाहेहु भायप भाई। करि पितु मातु सुजन सेवकाई।।[११] मानस में गोस्वामी जी ने यह राष्ट्रीय संदेश दिया है कि विवत्ति में व्यक्ति को अपना धैर्य नहीं खोना चाहिये। भरत का महान त्याग, एवं प्रखर बैराग्य निःसन्देह विषय परिस्थिति में राष्ट्र वासियों के लिए अनुकरणीय कहा जा सकता है। भरत उन श्रेष्ठतम पुरूषों में से थे, जिनका अपना कोई स्वार्थ ही नही था। भरत-प्रेम की साक्षात मूर्ति हैं। इस दिशा में मानस हम सबको प्रेरणा प्रदान करता है-

एकहिं आँक इहइ मन माहीं। प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं।।
भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे। राम सनेह सुधाँ जनु पागे।।
मातु सचिव गुर पुर नर नारी। सकल सनेह बिकल भए भारी।।
भरतहिं कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आहीं।।
तात भरत अस काहे न कहहू। प्रान समान राम प्रिय अहहू।।[१२]

मानव कल्याण के लिए त्याग से बढ़कर कोई उपलब्धि नहीं कही जा सकती। गोस्वामी जी इस मार्मिक दृश्य का सफल चित्रण करने में सर्वथा समर्थ हैं। राम-लक्ष्मण के शंका का समाधान करते हुए भरत जी के निर्मल की प्रशंसा करते हैं-

कही तात तुम्ह नीति सुहाई। सब ते कठिन राजमदु भाई।।
जो अचवँत नृप मातहिं तेई। नाहिन साधुसभा जेहिं सेई।।
सुनहु लखन भल भरत सरीसा। विधि प्रपंच महँ सुना न दीसा।।
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना।।[१३]

राम लक्ष्मण से कहते हैं, हे भाई! संसार में राज्य का मद सबसे अधिक होता है। पर भरत को राज्य भी आकर्षित नही कर सका। सरे जगत में भरत के समान शीलवान श्रेष्ठ एवं पवित्र भाई दूसरा नहीं हुआ-

जौं न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को।
कबि कुल अगम भरत गुनगाथा। को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा।।[१४]

श्री राम चन्द्र जी का परम पवित्र एवं प्रेम पूर्ण वाणी सुनकर समस्त देवता भी भरत की प्रशंसा में कहते हैं, यदि जगत में भरत का जन्म न हुआ होता तो धर्म की धुरी को कौन धारण करता? और राम को छोड़कर दूसरा कोई भी भरत को जान नहीं सकता-

हरषहिं निरखि राम पद अंका। मानहुँ पारसु पायउ रंका।।

भरत जी मार्ग में राम के चरण चिन्ह देखकर ऐसे प्रसन्न होते हैं, मानो रंक को पारसमणि मिल गई हो-

होत न भूतल भाउ भरत को। अचर-सचर चर अचर करत को।।१५

भरत जी की प्रशंसा मं साधक एवं सिद्ध पुरूष भी यही कहते हैं कि यदि इस पृथ्वी तल पर भरत का जन्म न होता तो संसार के मनुष्यों का मार्ग दर्शन कौन करता?

भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन।।
करत प्रबेस मिटे दुख दावा। जनु जोगी परमारथु पावा।।
कर कमलनि धनु सायकु फेरत। जिय को जरनि हरत हँसि हेरत।।
सानुज सखा समेत मगन मन। बिसरे हरष सोक सुख-दुख गन।।
पाहिं नाथ कहि पाहिं गोसाई। भूतल परे लकुट की नाई।।
उठे रामु सुनि प्रेम अधीरा। कहुँ पर कहुँ निषंग धनु तीरा।।
मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी। कवि कुल अगम करम मन बानी।
अगम सनेह भरत रघुवर को। जहँ न जाइ मनु बिधि हरि हर को।।[१६]

राम-भरत को अत्यंत व्याकुल देखकर उनका बड़े ही स्नेह से समाधान करते हैं। भरत तुम दुःखी मत होओ। तुम्हारे धर्माचरण के प्रभाव से ही पृथ्वी टिकी हुई है। इस प्रकार गोस्वामी जी ने त्याग, प्रेम, सत्य आदि विविध रूपों में अपनी राष्ट्रीय विचारों की अभिव्यक्ति करते रहे हैं। उनका हृदय राष्ट्रीय उमंगो से भरकर तथा मानवता परक था। वे जनता तक अपना व्यापक राष्ट्रीय संदेश पहुँचाना चाहते थे। उनके राम चरित मानस में देश की वास्तविक दशा झलकती है। रामचरिमानस का प्रभाव सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्रीय साहित्य एवं समाज पर पड़ा है। गोस्वामी जी ने बदली परिस्थितियों में राष्ट्रीय जागृति का शंखनाद देश के कोने-कोने में बजाकर राष्ट्रीय ऋण चुकाया तथा अपनी वाणी में करूणा, दया, ममता, प्रेम, सहानुभूति लाकर मानव जाति में संजीवनी शक्ति भरने का प्रयास किया। इस प्रकार रामचरितमानस में मानव संस्कृति का जीव जगत, ब्रह्म, माया आदि का वर्णन गोस्वामी तुलसीदास ने बड़ी ही उदारता के साथ प्रस्तुत किया है।

संदर्भ -

1. रामचरितमानस, बालकाण्ड, दो. १३, चो. ५, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर.
2. वही, अयोध्याकाण्ड, दो. १२५, चौ. ४.
3. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दो. १२५, चौ. ४, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर.
4. वही, बालकाण्ड, दो. २०४, चौ. ४.
5. गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ १३३-१३४, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल.
6. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुखपत्र-शीर्षक तुलसी साहित्य में मानव-मूल्य एवं व्यापक जीवन दृष्टि की अभिव्यक्ति, सम्पादक डॉ. प्रभात शास्त्री, पृष्ठ ३.
7. वही, पृष्रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दो. २७, चौ. २-३, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर.
8. देशबन्धु, ६ दिसम्बर १९८७ शीर्षक रामचरितमानस में उत्तम काव्य तत्व, अवकाश अंक, लेखक हरिशंकर परसाई.
9. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुखपत्र, शीर्षक तुलसी साहित्य में मानव-मूल्य एवं व्यापक जीवन दृष्टि की अभिव्यक्ति, सम्पादक डॉ. प्रभात शास्त्री, पृष्ठ ३, ३१, अगस्त, १९८९.
10. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दो. १५१, चौ. ३ से ५, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर.
11. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दो. १८२/१ से १८३/१-३, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर.
12. वही, अयोध्याकाण्ड, दोहा २३१, चौ. ६, ७,८.
13. वही, अयोध्याकाण्ड, दोहा २३३, चौ. १,२.
14. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड़, दो. २३८ चौ. ८.
15. वही, अयोध्याकाण्ड, दो. २३९/२-४, ८ व २४०/१-४, २४१/१-३.